राष्ट्रोपनिषत्

रचयिता
स्व. आचार्य डॉ. नारायणशास्त्री काङ्कर विद्यालङ्कारः
(महामहिम-राष्ट्रपति-सम्मानित)

हिन्दी-रूपान्तरण-कर्त्री
सौ. श्रीमती इन्दु शर्मा
एम.ए., शिक्षाचार्या

अंग्रेजी-रूपान्तरण-कर्त्ता
महामण्डलेश्वरः स्वामी श्री ज्ञानेश्वरपुरी
विश्वगुरुदीप आश्रम शोध संस्थानम्, जयपुरम्

दण्ड एवेश्वरो नूनं, स एव जन-शासकः ।
तस्मिन् हि शिथिले जाते, भ्रष्टाचारः प्रवर्धते ॥१९६॥

निश्चितरूप से दण्ड ही ईश्वर है और वह दण्ड ही जनता का शासक है। उस दण्ड के शिथिल होने पर ही भ्रष्टाचार बढ़ता है।

Surely, punishment is god and that punishment is the ruler of the people. By relaxing the punishment corruption rises.

दयाभावो न यत्रास्ति, वैमनस्यं च पदे पदे ।
तत्र नास्ति सुखं शान्तिर्, जीवनं नरकायितम् ॥१९७॥

जहाँ दयाभाव नहीं होता है और कदम कदम पर वैमनस्य बना रहता है, वहाँ सुख शान्ति नहीं होती और जीवन नरक बन जाता है।

Where is no feeling of mercy and on every step is enmity, there is no happiness and peace and life becomes/is hell.

दाता चेत् भिक्षुको यत्र, भिक्षुकश्च प्रशासकः ।
इदं द्रष्टुं यदीच्छा स्याद्, लोकतन्त्रं विलोक्यताम् ॥१९८॥

दाता जहाँ भिक्षुक बन जाता है और भिक्षुक जहाँ प्रशासक, यदि यह देखने की इच्छा हो तो लोकतन्त्र को देख लो। लोकतन्त्र में यही मिलेगा।

If one wants to see how the giver becomes poor and poor rules, one should look at the democracy. There it can be seen.

दिव्यो यस्येतिहासः स्याद्, विभ्रष्टो यद्यसौ भवेत् ।
चिन्तायाः किमिद् तर्हि, विषयो नैव कथ्यताम् ? ॥१९९॥

जिसका प्राचीन इतिहास दिव्य रहा हो, यदि बाद में वही विशेष भ्रष्ट हो जाय तो क्या यह चिन्ता का विषय नहीं कहा जाय ?

Isn't that troubling if some country's ancient history is divine and present is corrupted?

दीनो हीनः क्षुधाऽऽर्त्तश्च, कार्याकार्ये न वेत्ति हि ।
तस्मात् तस्य वृथा निन्दा, स्वयं स्वः किं न दृश्यते ? ॥२००॥

दीन, हीन और भूख से पीड़ित व्यक्ति करने और न करने योग्य काम को नहीं जानता है । इसलिये उसकी निन्दा करना व्यर्थ है । अरे ! अपने आपको ही क्यों नहीं देख लेते ?

Poor, powerless and hungry person cannot distinguish between useful and useless work. Therefore, it is useless to condemn him. Hey, why don't you look at yourself?

दीनो हीनो दरिद्रश्च, विद्यावानपि शिक्षकः ।
कार्यं करोति सम्यग् न, राष्ट्रोत्थानं कथं भवेत् ? ॥२०१॥

दीन, हीन और दरिद्र बना हुआ (नहीं नहीं बनाया हुआ) शिक्षक विद्यावान् होता हुआ भी अच्छी तरह कार्य नहीं करता है तो राष्ट्र का उत्थान कैसे होगा ?

How can the nation prosper when an oppressed, powerless and poor teacher, although full of knowledge, cannot do his work properly?

दीपावली–दिनेऽनल्पा, दीपाः प्रज्वालिताः परम् ।
घोरं तमो नैव नष्टं, जनानां मानसे स्थितम् ॥२०२॥

दिवाली के दिन बहुत सारे दीपक जले, पर लोगों के मन में मौजूद घोर अन्धकार नष्ट नहीं हुआ ।

On the day of the Diwali, so many lights are lit, but still, the terrible darkness in the minds of the people was not destroyed.